पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन सामाजिक–आर्थिक पहलू

डॉ. मुकेश चन्द्र द्विवेदी एवं डॉ. लेखा सेंगर
अर्थशास्त्र विभाग रास्वरोग्राउ.महा. पुखरायाँ,

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म 25 सितम्बर 1916 में मथुरा के छोटे से गांव नगला चन्द्रभान में हुआ था। 3 वर्ष की उम्र में अपने पिता जी का तथा 7 वर्ष की अवस्था में उनकी माता जी का देहान्त हो गया। वह अपने माता पिता के प्यार से वंचित हो गये किन्तु उन्होंने असहनीय दर्द की दिशा को बहुत ही सहजता, सरलता तथा सुन्दरता से लोक कल्याण की ओर मोड़ दिया। वह हंसते हुए जीवन में संघर्ष करते रहे। पण्डित जी का पढाई का शौक बचपन से ही था। इण्टरमीडिएट की परीक्षा में उन्होने सर्वोच्च अंक प्राप्त कर अति मेधावी छात्र होने का कीर्तिमान स्थापित किया। आपकी सीख थी कि आप जो कहते हैं वही करते है, वही सोचते है और जो सोचते है वही आपकी वाणी में आता है तब इश्वरीय तथा प्रकृति की तमाम शक्तियां आपकी मदद करने के लिये चारों ओर से आ जाती है। उन्होने कहा था कि हमारी राष्ट्रीयता का आधार भारत माता है, केवल भारत ही नही, माता शब्द हटा दीजिये तो भारत केवल जमीन का टुकड़ा मात्र बन कर रह जाएगा। (1-3)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्र के सजग प्रहरी व सच्चे राष्ट्र भक्त के रूप में भारत वासियों के प्रेरणास्त्रोत रहे हैं। राष्ट्र की सेवा में सदैव तत्पर रहने वाले दीनदयाल जी का यही उद्देश्य था कि वे अपने राष्ट्र भारत को सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक क्षेत्रों में बुलंदियों तक पहुंचा देख सके। (4)

एकात्म मानववाद पंडित दीनदयाल उपाध्याय के द्वारा दिया गया समग्र दर्शन है, वे इसके ऋषि हैं। वे मानव में पूरी सृष्टि देखते हैं। इसी मानव मे परिवार है, परिवार से जुडा समाज है, फिर राष्ट्र है, फिर सृष्टि है, परमेष्टि है। इसलिए पण्डित जी के इस तत्व दर्शन को 'एकात्म मानववाद' कहना उचित होगा। पण्डित जी का यह दर्शन एकात्म मानववाद इस लिए प्रसिद्ध हो गया क्योंकि पण्डित जी भारत की राष्ट्रवादी पार्टी भारतीय जनसंघ के शिखर पुरुष थे, सभी उनके विचारों से सहमत होते थे। पंडित जी सरल सच्चा और सादगीपूर्ण जीवन जीते थे। उनकी यही सादगी सीधे लोगों के दिलों को छूती थी और बरबस ही लोग उनकी बातों को सुनाने को तत्पर हो जाते थे।

राजनीति मे 'वाद' का चलन ब्रिटिश प्रणाली की विषेशता है। समाजवाद, पूंजीवाद, साम्यवाद जैसे वादो के बीच पण्डित जी का एकात्म– मानव दर्शन भारत में एक दीप–ज्योति बनकर उभरा, राजनीति के क्षेत्र में भी यह दृष्टि अपने विचार के समर्थकों और विरोधियों के मध्य रखी जा सके इस लिये व्यवहारिक रूप लेते हुये इसे 'एकात्म मानववाद' कहा गया है। माना यह गया था कि 'एकात्म मानववाद' को उसके अर्थ से या नाम से समझने की कोशिश करते हुए, भारत के सुधी लोग जब इसकी गहराई में उतरेगें तो उन्हें भी एकात्म मानव के दर्शन हो जायेगें, और वाद छूट जायेगा। स्पष्ट

है कि 'वाद' एकपक्षीय विचार मात्र होता है जब कि 'दर्शन' सदा सर्वदा समग्र होता है।(5)

पंडित दीनदयाल जी का स्पष्ट मानना था कि समाजवाद, साम्यवाद और पूंजीवाद व्यक्ति के एकांगी विकास की बात करते है। जबकि व्यक्ति की समग्र जरूरतों का मूल्यांकन किए बिना कोई भी विचार भारत के विकास के अनुकूल नही होगा। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने भारतीयता के अनूकूल पूर्ण भारतीय चिन्तन के रूप में एकात्म मानववाद का दर्शन प्रस्तुत किया। जो पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जीवन यात्रा के विविध आयाम है, कम उम्र में ही दुनिया को अलविदा कहने वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने तत्कालीन कांग्रेस सरकार की नीतियों का न सिर्फ विरोध किया बल्कि उस विरोध के साथ–साथ वैकल्पिक वैचारिक मॉडल भी प्रस्तुत किया।

एकात्म मानववाद के रूप में पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारत की तत्कालीन राजनीति और समाज को दिशा में मुड़ने की सलाह दी, जो सौ फीसदी भारतीय है। एकात्म मानववाद के इस वैचारिक दर्शन का प्रतिपादन पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने मुम्बई में 22 से 25 अप्रैल 1965 मे चार व्याख्यानो में दिये गए भाषण में किया। इस भाषण में उन्होंने एक मानव के सम्पूर्ण सृष्टि से सम्बन्ध पर व्यापक दृष्टिकोण रखने का काम किया था। वे मानव को विभाजित करके देखने के पक्षधर नही थे। वे मानव मात्र को हर दृष्टि से मूल्यांकन के बात करते थे। जो उनके सम्पूर्ण जीवन काल में छोटी बड़ी जरूरतों के रूप में सम्बन्ध रखता है। दुनिया के इतिहास में सिर्फ मानव मात्र के लिए अगर किसी एक विचार दर्शन ने समग्रता से चिंतन प्रस्तुत किया है तो वो एकात्म मानववाद का दर्शन है। (5)

दीनदयाल उपाध्याय एक दार्शनिक, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री एवं राजनैतिक व्यक्ति थे। इनके द्वारा प्रस्तुत दर्शन को एकात्म मानववाद कहा जाता है, जिसका उददेश्य एक ऐसा स्वदेशी सामाजिक–आर्थिक मॉडल प्रस्तुत करना था जिसमें विकास के केन्द्र में मानव हो।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने पश्चिमी पूंजीवादी, व्यक्तिवादी एवं मार्क्सवादी समाज दोनो का विरोध किया, लेकिन आधुनिक तकनीक एवं पश्चिमी विज्ञान का स्वागत किया। ये पूंजीवाद एवं समाजवाद के मध्य एक ऐसी राह के पक्षधर थे जिसमे दोनो प्रणालियों के गुण तो मौजूद हो लेकिन उनमें अतिरेक एवं अलगाव जैसे अवगुण न हो। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के अनुसार पूंजीवादी एवं समाजवादी विचार धाराएं केवल मानव के शरीर एवं मन की आवश्यकताओं पर विचार करती है। इसीलिए वे भौतिकवादी उद्देश्य पर आधारित है, जबकि मानव के सर्वांगीण विकास के लिए आत्मिक विकास भी आवश्यक है। साथ ही इन्होंने ने एक वर्गहीन, जातिहीन और सघंर्षमुक्त सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की थी।

एकात्म मानववाद की वर्तमान प्रासंगिकता में आज विश्व की एक बड़ी आबादी गरीबी में जीवन यापन कर रही है। विश्व भर में विकास के कई मॉडल लाये गये लेकिन आशानुरूप परिणाम नहीं मिला। अतः दुनिया को एक ऐसे विकास की मॉडल की

तलाश है जो एकीकृत और संधारणीय हो। एकात्म मानववाद ऐसा ही एक दर्शन है जो अपनी प्रकृति में एकीकृत एवं संधारणीय हैं। एकात्म मानववाद का उद्देश्य व्यक्ति एवं समाज की आवश्यकता को संतुलित करते हुए प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित करना है। (6)

दीनदयाल उपाध्याय जी एक प्रखर विचारक, अर्थचिन्तक, शिक्षाविद, साहित्यकार, उत्कृष्ट सगंठन कर्ता तथा एक बहुमुखी प्रतिभा वाले व्यक्ति थे जिन्होनें जीवन पर्यन्त अपनी व्यक्तिगत ईमानदारी व सत्यनिष्ठा को महत्व दिया। दीनदयाल उपाध्याय जी की मान्यता थी कि हिन्दू कोई धर्म या सम्प्रदाय नही, बल्कि भारत की राष्ट्रीय संस्कृति है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी मजहब और सम्प्रदाय के आधार पर भारतीय संस्कृति का विभाजन करने वालो को देश के विभाजन का जिम्मेदार मानते थे। वह हिन्दू राष्ट्रवादी तो थे ही, इसके साथ ही साथ राजनीतिक पुरोधा भी थे। उनकी कार्यक्षमता से प्रभावित होकर डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी उनके लिये गर्व से सम्मानपूर्वक कहते है कि–यदि मेरे पास दो दीनदयाल हो, तो मै भारत का राजनीतिक चेहरा बदल सकता हूँ। हमारा मानना है दीनदयाल उपाध्याय जी के विचार देश की नही, दुनिया का मार्गदर्शन कर सकते है। उनका कहना था कि हमारी प्रगति का आंकलन सामाजिक सीढी के सर्वोच्च पायदान पर खड़े व्यक्ति की स्थिति से नहीं होगा बल्कि कतार में खड़े अंतिम व्यक्ति से होगा। उनका मानना था कि भारत की सांस्कृतिक विविधता ही उसकी असली ताकत है। और इसी के बूते पर वह एक दिन विश्व–मंच पर अगुवा राष्ट्र बन सकेगा।

कई साल पहले उनके द्वारा स्थापित यह विचार आज माननीय प्रधानमंत्री जी के द्वारा किये जाने वाले कार्यों के कारण मूर्तरूप ले रहा है। आज भारत की सांस्कृतिक विरासत पूरी दुनिया को प्रकाशमान कर रही है, एकात्म मानव दर्शन ही भारत का भाग्यविधाता है। इसमें भारत का 'स्व' है, चूंकि भारत ने सिर्फ अपने लिये कुछ सोचा और किया नही, भारत की धरती सृष्टि के चर–अचर और जड़ चेतन सबके सुख और समृद्धि के लिये अराधना, तपसाधना नीरांजना की भूमि रही है। इसलिये यह दर्शन विश्व दर्शन भी है, क्योंकि यह समग्र दर्शन है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. लाल, रमन बिहारी:2003, पन्द्रहवाँ संस्करण "शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार" रस्तोगी पब्लिकेशन्स, शिवाजी रोड, मेरठ–250002
2. लाल, रमन बिहारी व सुनीता पलोड़:2006, प्रथम संस्करण, "शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग", आर0लाल बुक डिपो, निकट राजकीय इण्टर कॉलिज, मेरठ–250001
3. मित्तल, एम0एल0:2004, "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक", इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस,मेरठ
4. माथुर, एस0 एस0:1997 "शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार", विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा